# कविता / निर्वस्त्र

वस्त्र वस्त्र वस्त्र वस्त्र
प्रजा निर्वस्त्र

व्यस्त व्यस्त व्यस्त
विकास हुआ पस्त

हठ हठ हठ हठ हठ हठ हठ
मजलूमों पर लट्ठ

मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र
बेबस लोकतंत्र

यत्र यत्र यत्र यत्र यत्र यत्र यत्र
अव्यवस्था सर्वत्र

व्रत व्रत व्रत व्रत व्रत व्रत व्रत
सब बेचकर मस्त

भक्त भक्त भक्त भक्त भक्त भक्त भक्त
गुलाम रक्त

लत लत लत लत लत लत लत
देशी ठर्रे पर मत

फिर गत गत गत गत गत गत गत
मस्तक सदा नत....

बच्चा लाल उन्मेष

## शहीद दिवस

# ऊधम सिंह / रणबीर सिंह दहिया

ऊधम सिंह मेरे ग्यान मैं, भारत देश की श्यान मैं
इस सारे विश्व महान मैं, यो तेरा नाम अमर हो गया।।

1

असूलां की जो चली लड़ाई, उसमैं खूब लड़या था तूं स्याहमी अंग्रेजां के भाई, डटकै हुया खड़या था तूं
बबर शेर की मांद के म्हां, अकेला जा बड़या था तूं
अव्वल था तु ध्यान मैं, रस था तेरी जुबान मैं
सारे ही हिंदुस्तान मैं, यो तेरा पैगाम अमर हो गया।।

2

देख इरादा पक्का तुम्हारा, हो गया मैं निहाल जमा
भारत मां की सेवा में दे दिया सब धन माल जमा
एक बै मरकै देश की खातर जीवै हजारौ साल जमा
डायर नै सबक चखान मैं, इस लड़ाई के दौरान मैं
निशाना सही बिठान मैं, यो तेरा काम अमर होग्या।।

3

पक्के इरादे के साहमी अंग्रेजां की पार बसाई ना
जलियां आला बाग देखकै फेर तेरै हुई समाई ना
धार लई अपने मन मैं किसे और तै बताई ना
तू अपने इस इम्तिहान मैं, अपनी ही ज्यान खपान मैं
देश की आन बचान मैं, तू डेरा थाम अमर होग्या।।

4

जो लड़ी-लड़ाई तनै साथी वा लड़ाई थी असूला पै

# फिल्म / द अदर सन : आखिर हमारी पहचान क्या है?

**मनीष आजाद**

क्या हो अगर एक दिन आपको पता चले की आप जीवन भर जिस धर्म को मानते आये है, आपका जन्म उसमे नहीं बल्कि उस धर्म में हुआ है, जिससे आप घृणा करते है. उस वक्त आप किस कदर सामाजिक- सांस्कृतिक- धार्मिक - आध्यात्मिक संकट से गुजरेंगे।

यही कहानी है इस फ्रेंच फिल्म 'द अदर सन' की। इस कहानी के साथ यह फिल्म इसलिए खास हो जाती है, क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि इजराइल व फिलिस्तीन है, यानी यहूदी और मुस्लिम धर्म का टकराव।

जोसेफ जब 18 साल का होता है तो इजराइल की सेना में भर्ती होने के लिए वहां के नियम के अनुसार उसका डीएनए टेस्ट होता है। टेस्ट के रिजल्ट से पता चलता है कि जोसेफ यहूदी सिल्बर्ग और ओरिथ का बेटा नहीं है। फिर वह किसका बेटा है? परिवार में भूचाल आ जाता है। कहानी आगे बढ़ते हुए जोसेफ के जन्म तक जाती है। जोसेफ ने इजराइल के जिस हॉस्पिटल में जन्म लिया था, उसका रिकॉर्ड खंगाला जाता है। पता चलता है कि 1991 में जिस दिन जोसेफ का जन्म हुआ था, उसी दिन 'खाड़ी युद्ध' के दौरान एक मिसाइल आकर हॉस्पिटल के पास गिरी थी। बच्चों को बचाने की प्रक्रिया में जोसेफ एक दूसरे बच्चे से बदल गया था। डीएनए प्रक्रिया से ही पता चलता है की जोसेफ के पिता सईद और लीला फिलिस्तीनी मुस्लिम है जो गज़ा पट्टी में रहते है। और उनके घर जो बच्चा यासीन पल रहा है वो दरअसल यहूदी है, जिसके असली पिता सिल्बर्ग और ओरिथ है।

फिलिस्तीन और इजराइल के ऐतिहासिक संघर्ष की पृष्ठभूमि में दोनों परिवारों पर मानो बिजली गिर जाती हो। सहसा उन्हें अहसास होता है की पिछले 18 सालों से वे अपने दुश्मन के बेटे को पाल रहे थे। लेकिन फिर अगले ही पल उन्हें ख्याल आता है कि 'उनका अपना बच्चा' भी तो दुश्मन के घर में दुश्मन की ही तरह पल रहा है। दोनों यहूदी और मुस्लिम परिवार भयानक नैतिक-धार्मिक और अध्यात्मिक संकट से गुजरते है। दोनों परिवारों की माएं इस तथ्य को जल्दी ही अपना लेती है और एक तरह से यह मानने लगती हैं कि उनके अब दो बेटे हो गए। पिता काफी समय तक इस तथ्य को नही पचा पाते और बेहद तनाव में रहते है। यासीन का भाई बिलाल रेडिकल फिलिस्तीनी है और उसे भी यह तथ्य पचाने में दिक्कत हो रही है।

लेकिन खुद जोसेफ और यासीन इस तथ्य को जल्दी ही स्वीकार कर लेते है। और अपनी धार्मिक पहचान से ऊपर उठने लगते है। फिल्म का वह दृश्य बहुत ही असरकारक है, जब जोसेफ इजराएल की सीमा लांघ कर गज़ा पट्टी में प्रवेश करता है और अपनी नई पहचान से रूबरू होता है। चारो तरफ़ गरीब बच्चों के खेलते दृश्य और मुस्लिम महिला का जोसेफ का हाथ पकड़ कर उसे यासीन के घर पहुचाना बहुत असरकारक है। खाने की मेज पर जोसेफ के साथ बैठ कर किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा की क्या बोले। सभी अपनी पहचान से लड़ रहे है। या समझ नहीं पा रहे की मनुष्य की असली पहचान क्या है?

मैंने किसी और फिल्म में मौन को इतना मुखर नहीं देखा। इस मौन को जोसेफ अपने संगीत से तोड़ता है। जोसेफ जो गीत गाता है, उससे यासीन, बिलाल और उनके पिता सईद और लीला भी जुड़ जाते है। जोसेफ का साथ देने के लिए सईद अपना गिटार ले आता है० यहां संगीत एक प्रतीक रूप में भी है। दरअसल इजराइल और फिलिस्तीन का धर्म के अलावा (सच तो यह है कि यहां भी बहुत कुछ सांझा है) बहुत कुछ सांझा है। ठीक उसी तरह जैसे भारत पाकिस्तान का बहुत कुछ सांझा है। लेकिन साम्राज्यवादी राजनीति इस सांझेपन पर राख डाल देती है और हम एक दूसरे को दुश्मन नज़र आने लगते है।

जोसेफ को खोजते हुए जब सिल्बर्ग फिलिस्तीन में प्रवेश करता है तो लॉन्ग शॉट में विशालकाय ऊंची दीवार (नस्ली दीवार) के नीचे चलते हुए मानो यह दृश्य यही कह रहा हो कि कैसा समय आ गया है जब दीवारें भी इंसानियत से ऊंची हो गई हैं। फिल्म अंत में यह शाश्वत सवाल छोड़ जाती है कि वह वक्त कब आएगा जब हमारी सिर्फ एक पहचान होगी। और वह होगी - इंसानियत की पहचान।

आज के ध्रुवीकृत विश्व में यह फिल्म बहुत ही प्रासंगिक हो जाती है। 2012 में आई इस फिल्म का निर्देशन लोरेन लेवी ने किया है.

# गर्व से कहो हम हिन्दू हैं?

**कश्मीरा शाह चतुर्वेदी**

श्री राम भी हिन्दू थे, और रावण भी (वो भी विद्वान पांडित्यपूर्ण ब्राह्मण)।

श्री कृष्ण भी हिन्दू थे और कंस भी।

कौरव भी हिन्दू थे और पांडव भी।

गांधी भी हिन्दू थे और गोडसे भी।

अब थोड़ा विचार करो, सोचो, समझो और बताओ तुम कौन सी श्रेणी, समूह में हो? हम हिन्दू हैं कहने से हिन्दू नहीं बनोगे कर्म से हिन्दू बनोगे।

सत्य, अहिंसा, परोपकार, दया, राम, कृष्ण, बुद्ध गांधी के आदर्शों वाले हिन्दू हो या रावण, कंस और गोडसे वाले ?

घृणा फैलातो हो या कि प्रेम ? हिंसा करते हो या कि दया?

वेद उपनिषद गीता रामायण रामचरित मानस कुछ पढ़ते हो ?

यदि हां ! तो सर्वे भद्राणि पश्यन्तु , पढ़ा? माता पृथ्वी पुत्रो अहम पृथिव्या पढ़ा? परहित सरिस धर्म नहिं भाई पढ़ा?

यदि पढ़ा तो उसे समझा? थोड़ा बहुत अपने जीवन में लागू किया?

संध्या प्रार्थना करते हो?

अपने हिन्दू ग्रन्थ पढ़ते हो?

यदि हां ! तो थोड़ा बहुत लागू करते हो?

श्री राम का रामायण पढ़ा? कृष्ण की गीता पढ़ी? बुद्ध को पढ़ा? गांधी को पढ़ा? स्वामी विवेकानंद को पढ़ा? स्वामी दयानंद को पढ़ा?

यदि पढ़ा तो विचार करो उनके विचारों से तुम्हारे विचार, व्यवहार तथा कर्म मेल खाते हैं?

यदि हां!

तो तुम उनकी श्रेणी के हिन्दू हो अन्यथा विपरीत श्रेणी समूह में हो यानी कि रावण, कंस, कौरव, गोडसे वाली श्रेणी और समूह में!

चुनाव कर लो और तब लिखो, बोलो किस तरफ हो कौन से हिन्दू हो?

जिन्होंने यह अफवाह फैलाई है कि हम हिन्दू हैं, उनको सनातन धर्म और हिन्दू धर्म का एक अक्षर नहीं मालूम। एक दिन ऐसे एक महानुभाव पीएचडी हैं, टीवी पर बोल रहे थे। राम चरित मानस की एक चौपाई बोले, मगर अशुद्ध। वे पढ़ते लिखते कुछ नहीं केवल अफवाह फैलाते हैं। आने वाली संततियों और युवकों को गुमराह करते हैं। उनका जीवन बिगाड़ते हैं।

मेरी सलाह है हिन्दू की उपरोक्त जिस श्रेणी, समूह में हो उसको ठीक से समझ लो उसकी सोच, उसके सिद्धांत, उसकी जीवन यात्रा का मार्ग, उसकी मंजिल, तब वहां स्थिर हो जाओ। जिधर, जिस समूह में रहोगे उसके परिणाम भोगने होंगे। उससे बच नहीं सकते। आज नहीं तो कल! जान लो प्रिय लगने वाला मार्ग और जीवन श्रेयस्कर नहीं होता। उसका अंत दुखद, ट्रेजिक होता है। यही दुनिया का इतिहास हमें बताता है।